विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 4 अंक: 15 सितंबर, 2011

हिंदी दिवस : 2011

भारतीय संविधान सभा द्वारा राजभाषा के रूप में हिंदी की स्वीकृति की ऐतिहासिक तिथि को मनाने वाला यह दिवस आज अपनी पारंपरिक उद्देश्यगत और भौगोलिक सीमाओं से परे स्थान बना रहा है । जहाँ भारत के कोने-कोने में हिंदी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा मनाए गए वहीं भारत से बाहर, हिंदी समाज ने इस दिवस को गौरवांवित करते हुए मॉरीशस से लेकर अमेरिका तक समारोहों, आयोजनों, प्रतियोगिताओं, पुस्तक मेलों की लंबी कतार लगा दी ।

विश्व हिंदी पत्रिका का यह अंक हिंदी दिवस की इन गतिविधियों से आपका परिचय करा रहा है ।

मॉरीशस में हिंदी दिवस

बाएँ से महामहिम श्री टी.पी सीताराम, माननीय मुकेश्वर चुनी, माननीय वसंत कुमार बनवारी तथा पुरस्कार विजेता

भारतीय उच्चायोग

4 अक्टूबर, 2011 को भारतीय उच्चायोग तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में फ़ेनिक्स स्थित केंद्र के सभागार में हिंदी दिवस मनाया गया ।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी तथा भारतीय उच्चायुक्त महोदय महामहिम टी. पी. सीताराम ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । इस अवसर पर हिंदी निबंध तथा हिंदी वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं के विजेता पुरस्कृत हुए ।...**शेष पढ़ें पृ.** 2

महात्मा गांधी संस्थान

महात्मा गाँधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित हिंदी सप्ताह 2007 से जैसे एक परंपरा का आरंभ हो गया है और इस संस्थान में अनेक गतिविधियों के माध्यम से कैम्पस में हिंदी का वातावरण छाया रहता है । इस वर्ष भी 20 सितंबर से शुरू होकर, एक सप्ताह तक महात्मा गांधी संस्थान के प्रांगण में हिंदी दिवस की धूम मची । संस्थान के विद्यार्थियों ने स्वरचित कविता प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, श्रुतलेख तथा अंत्याक्षरी प्रतियोगिताओं में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया।... **शेष पढ़ें पृ.** 3

हिंदी संगठन

भानुमति नागदान को 'साहित्य गौरव' सम्मान

सितंबर का यह महीना हिंदी भाषा को समर्पित किया गया । इसी हिंदीमय वातावरण में मॉरीशस में हिंदी संगठन ने 11 सितंबर से लेकर 17 सितंबर तक हिंदी सप्ताह का भव्य रूप से आयोजन किया । हिंदी संगठन की गतिविधियों की विशेषता एक बार फिर आम जनता तक पहुँच रही । पुस्तक मेला, हिंदी नामपट अभियान, हिंदी वेबसाइट और अभिमन्यु अनत आदि साहित्यकारों का सम्मान इनकी प्रमुख गतिविधियाँ रहीं ।... **शेष पढ़ें पृ.** 4

अमेरिका में हिंदी दिवस

अमेरिका के भारतीय उच्चायोग ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 14 सितंबर, 2011 को एक समारोह का आयोजन किया । इस अवसर पर वाशिंग्टन डी.सी. के कई शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक एवं छात्र-गण के साथ ही साथ मौके पर हिंदी कवि, लेखक, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संस्थान के सदस्य तथा अन्य हिंदी सेवी उपस्थित थे ।... **शेष पढ़ें पृ.** 6

अब हिंदी में चहकेगी ट्विटर की चिड़िया

प्रसिद्ध माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने हिंदी संस्करण का विमोचन किया । यह सुविधा हिंदी का प्रयोग करने वालों को उनकी मातृभाषा में अपने विचारों को ट्विट करने का अवसर देती है ।... **शेष पढ़ें पृ.** 7

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा

"अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता" एवं

"अंतर्राष्ट्रीय लोगो प्रतियोगिता"

विश्व हिंदी सचिवालय विश्व हिंदी दिवस : 2012 के उपलक्ष्य में एक ***"अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता"*** व अपने कामकाजी प्रयोग के लिए एक लोगो अपनाने के उद्देश्य से एक ***"अंतर्राष्ट्रीय लोगो प्रतियोगिता"*** आयोजित कर रहा है । पुरस्कार अत्यंत आकर्षक हैं । विस्तृत सूचना एवं नियम व शर्तों के लिए देखें, पृ.4 और पृ.5 तथा सचिवालय का वेबसाइट ।

भारतीय उच्चायोग द्वारा हिंदी दिवस

समारोह के मुख्य अतिथि व पुरस्कार विजेता

मॉरीशस । 4 अक्टूबर, 2011 को भारतीय उच्चायोग तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में फ़ेनिक्स स्थित केंद्र के सभागार में हिंदी दिवस मनाया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी तथा महामहिम श्री टी. पी. सीताराम ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । समारोह का आरंभ भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव, श्री मीमांसक के स्वागत भाषण से हुआ ।

इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त श्री टी. पी. सीताराम ने अपने उद्‌गार में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ***"हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए मॉरीशस में कई संस्थाओं का प्रयास प्रशंसनीय व अतुलनीय है । मॉरीशस के हिंदी साहित्यकार विश्व भर में प्रसिद्ध हैं । मॉरीशस की सरकार हिंदी भाषा की उन्नति की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है ।"***

कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि ***"मॉरीशस में हिंदी के उन्नयन हेतु कार्यरत संस्थाओं के श्रम के बिना हिंदी इतनी प्रगति नहीं कर पाती । हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार अत्यंत आवश्यक है । हिंदी ने हमारे चरित्र का निर्माण किया है और हमें एक पहचान दी है ।"***

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने अपने व्याख्यान में कहा कि ***"मॉरीशस में हिंदी भाषा बहुत सालों से शिक्षा का अंग बनी हुई है । उसके लिए आप में से कई लोगों ने अपनी तरह से कई लड़ाइयाँ लड़ी हैं । लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि हम लोग संतुष्ट होकर बैठ जाएँगे । आज भी हिंदी और बाकी सभी भाषाओं को और आगे बढ़ाने के लिए काम जारी है ।"*** उन्होंने आगे कहा कि ***"भाषाओं का शिक्षण पारंपरिक 'chalk and talk method' से बहुत ऊपर उठना चाहिए । हम चाहते हैं कि बच्चे अपनी भाषा में बोलें, उसमें खेलें, उसको जीएँ । इसी तरह भाषा का असली विकास हो पाएगा ।"***

उपस्थित महानुभाव

भारतीय उच्चायोग ने इस अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी निबंध तथा हिंदी वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया था । दोनों प्रतियोगिताएँ तीन वर्गों में बाँटी गई थीं जिनमें प्राथमिक , माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। समारोह में वाक्‌स्पर्धा के तीनों श्रेणियों के विजेताओं गेवीश रामचरण, दीपेश शर्मा तथा श्रीमती आरती हेमराज बुधन ने क्रमश: अपनी प्रस्तुति कीं। कार्यक्रम के अंत में हिंदी निबंध प्रतियोगिता तथा हिंदी वाक् स्पर्धा प्रतियोगिता के विजेताओं को माननीय मंत्रियों के कर-कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया साथ ही साथ कुछ प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किए गए ।

अवसर का लाभ उठाते हुए भारतीय उच्चायोग ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, हिंदी संगठन तथा हिंदी प्रचारिणी सभा को हिंदी शिक्षण सॉफ्टवेयर एवं हिंदी पाठ्य पुस्तकें भेंट कीं।

श्री राजनारायण गति जी को भेंट प्रदान करते हुए महामहिम श्री टी.पी. सीताराम

कार्यक्रम में संगीत और नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति भी हुई । इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के विद्यार्थियों ने सुमधुर आवाज़ में 'अम्बे' भजन सुनाकर श्रोताओं का मन आनंदित कर दिया । केंद्र की कथक शिक्षिका एवं छात्राओं ने भी मंच को संगीत व रंगों से सुसज्जित कर दिया। अमीर खुसरो की तीन रचनाओं को कथक की बानगी में पिरोकर कलाकारों ने सभागार को मुग्ध कर दिया ।

समारोह में शिक्षा मंत्रालय की पर्यवेक्षक अधिकारी श्रीमती प्रेमिला ओबिलक, उप उच्चायुक्त श्री प्रशांत पीसे, हिंदी संगठन के अध्यक्ष श्री राजनारायण गति, हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष श्री अजामिल माताबदल, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा तथा उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) कुंजल तथा हिंदी विभाग के प्राध्यापक, मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, मॉरीशस के धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा विभिन्न पाठशालाओं के शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित थे ।

इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा नृत्य प्रस्तुति

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

महात्मा गाँधी संस्थान में हिंदी सप्ताह

स्वरचित कविता प्रतियोगिता

वर्ष 2007 में जब महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग के कर्मठ सदस्यों ने हिंदी सप्ताह का प्रथम आयोजन किया था तब शायद ही किसी ने अनुमान लगाया होगा कि कुछ ही वर्षों में यह आयोजन संस्था के छात्र-छात्राओं के लिए, अध्यापकों के लिए व संपूर्ण हिंदी समाज के लिए एक महोत्सव बन जाएगा । इस वर्ष का हिंदी दिवस इस महोत्सव की लम्बी परंपरा में एक और कड़ी जोड़ने आया । हमारे संस्थान में अनेक गतिविधियों के माध्यम से कैम्पस में हिंदी का वातावरण छाया रहा ।

मंगलवार 20 सितंबर के इस महोत्सव का प्रथम कार्यक्रम हुआ छात्रों द्वारा स्वरचित कविता पाठ । अपना आरंभिक वक्तव्य देते हुए हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ. राजरानी गोबिन ने कहा कि हिंदी सप्ताह की इस परंपरा को सुचारु रूप से चलाने के लिए सभी का सहयोग प्राप्त हुआ और आशा है कि भविष्य में भी ऐसा ही हो । साथ ही युवा पीढ़ी को साहित्य-सृजन में अपना योगदान देते रहना चाहिए । कार्यक्रम का मीठा प्रारंभ संस्कृत विभाग की डॉ. पूर्णिमा रघुबर के मधुर गीत से हुआ।

प्रतिभागियों ने अनेक विषयों पर, अपने अनुभवों के आधार पर अपनी रचनात्मक कृतियाँ प्रस्तुत कीं । कुछ ने सभी को भावुक कर दिया और कुछ ने अनेक सामाजिक व व्यक्तिगत समस्याओं पर चिंतन करने के लिए दिमाग को विवश कर दिया । सभी की भागीदारी सराहनीय रही। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा तथा उप महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने इस कार्यक्रम में उपस्थिति देकर इसमें चार चांद लगा दी । निर्णायक मंडल में डॉ. अलका धनपत तथा सुश्री अंजलि चिंतामणि ने अपना निर्णय सुनाते हुए करण बलदावू की भावपूर्ण कविता 'जीने का अभिशाप' को प्रथम पुरस्कार ; यशसवी रामनियाल की 'माँ का हत्यारा' को द्वितीय पुरस्कार तथा पद्मजा दोमन की 'द्वितीय वर्ष की लडकियाँ' को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

छात्र छात्राओं द्वारा कविता पाठ ने हमारे अध्यापकों को भी धारा में खींच लिया व अंत में डॉ. हेमराज सुंदर तथा उर्दू विभाग के जनाब स्वाबिर गुदर ने अपनी कविताओं व अशार से सभी को मुग्ध कर दिया ।

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता

बुधवार 21 सितंबर, 2011 को भारतीय भाषा कॉम्प्लेक्स का प्रांगण बना मंच जिस पर अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने उतरे बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के छात्रों की छ टोलियाँ । माध्यम था नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता। इसमें अनेक विभागों के सदस्य, विश्व हिंदी सचिवालय के उप-महासचिव, रवींद्रनाथ ठाकुर महाविद्यालय के हिंदी शिक्षक व छात्र आदि उपस्थित थे ।

प्रथम टोली (जीवन का लाल रंग) ने रक्तदान के प्रति उदासीन जनता की मानसिकता को उजागर किया । मॉरीशस अथवा किसी भी देश के समाज की इस वास्तविकता को बड़ी ही कुशलता और नुक्कड़ नाटक की सामान्य विशेषताओं का पालन करते हुए सामने रखा गया । दूसरी टोली (तू तू मैं मैं) प्रथम वर्ष की थी जिसमें छात्राओं ने युवा पीढ़ी से जुड़ी कुछ ज्वलंत समस्याओं को उजागर किया । तृतीय टोली (मधुर मुस्कान) ने पैसों की प्यासी एक ऐसी महिला पर अपना नाट्य-विषय केंद्रित किया जो दूसरों की पीड़ा को स्वानुभव के आधार पर समझने लगती है । इसमें सामाजिक सेवा का भी पहलू दिखाई दिया ।

चौथी टोली (सत्ते पे पट्ठा) ने मनोरंजक शैली में अपनी प्रस्तुति वृद्धों पर केंद्रित की जबकि पाँचवी टोली (ई-ज़िन्दगी) ने आधुनिकता पर ही प्रश्न चिह्न लगाते हुए बिगड़ते पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों को उजागर किया । युवा पीढ़ी की उस ई-मानसिकता को इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है जिसके कारण प्रगति और विकास की अवधारणाएँ बदल रही हैं । छठी टोली (शक्ति सेना) ने सौरम्य काव्यात्मक व व्यंग्यात्मक शैली में नारी के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति के माध्यम से अनेक सवाल उठाए । इनमें पति-पत्नी संबंध, व्यभिचार, कुप्रथाएँ आदि अलग-अलग दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत किए गए ।

इस नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता की विजेता टोली "सत्ते पे पट्ठा" दल रही जबकि सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का खिताब याचना मिश्रा को गया । कार्यक्रम का संचालन डॉ. अलका धनपत तथा डॉ. के. के. झा ने किया । निर्णायक मंडल के सदस्य थे डॉ. राजरानी गोबिन और विनय गुदारी ।

विजय-पराजय के मापदंडों से परे, भारतीय लोक-नाट्य परंपरा की धारा से निकली विधा को भारत से इतनी दूर, इस धरती पर साल दर साल मुखरित कराने वाले ये छात्र हिंदी के वैश्विक मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान बनाते जा रहे हैं ।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

2007 से आज तक, हर वर्ष हिंदी सप्ताह के अंतर्गत सर्वाधिक उत्सुकता जिस अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के लिए होती हैं वह गुरुवार 22 सितंबर, 2011 को संपन्न हुई । कार्यक्रम संस्थान के सभी विभागों के बीच इतना प्रचलित है कि प्रांगण में भीड़ जमा हो गई । इस प्रतियोगिता में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री अरविंद बिसेसर ने हिंदी विभाग द्वारा आयोजित हिंदी सप्ताह के लिए बधाई दी और छात्रों के उत्साह को बढ़ाने के लिए अन्य विभागों के सहयोग की भी मांग की ।

कार्यक्रम का श्रीगणेश भोजपुरी विभाग के जयगणेश दाऊसिंह के एक गीत से हुआ जिसके बाद संगीत की प्रवाहमय धारा में सभी प्रतिभागी बहते गए । इस प्रतियोगिता में कुल 16 टीमें थीं । बी.ए. (प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष), बी.ए. भारतीय दर्शन, तथा टीचर डिप्लोमा प्रोग्राम के भी छात्र इसमें भाग लेने आए।

फ़ाइनल में तृतीय वर्ष की रागिनी टीम की जीत हुई।

पुरस्कार वितरण समारोह

इन सभी प्रतियोगिताओं के उपरांत परमोत्कर्ष शुक्रवार 23 सितंबर, 2011 को महात्मा गाँधी संस्थान के सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ । भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव व भाषा एवं शिक्षा अधिकारी श्री मीमांसक जी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। अतिथियों में महात्मा गाँधी संस्थान तथा रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान परिषद के अध्यक्ष श्री रवींद्र द्वारका, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा, उप-महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, एम.जी.आई. के Tertiary Sector की अध्यक्षा डॉ. रेशमी रामधनी आदि उपस्थित थे ।

समारोह में श्री रवींद्र द्वारका ने मॉरीशस में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रचार के आरंभिक दौर की ऐतिहासिक भूमिका बाँधते हुए महात्मा गाँधी संस्थान के अद्वितीय योगदान की भी प्रशंसा की । मुख्य अतिथि श्री मीमांसक ने एम.जी.आई. व विश्व हिंदी सचिवालय को भाषा एवं संस्कृति के स्तर पर मॉरीशस एवं भारत के बीच सेतु के रूप में चित्रित किया ।

इस साहित्यिक व संगीतमय कार्यक्रम में बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने एक भाव गीत प्रस्तुत किया । फिर कविता प्रतियोगिता के विजेताओं ने बारी-बारी से अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं । नुक्कड़ नाटक के विजेताओं ने भी अपनी प्रस्तुति से सभी को आनंदित किया । इन सभी विजेताओं के अतिरिक्त हिंदी सप्ताह के ही संदर्भ में आयोजित श्रुतिलेख प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया । हिंदी विभाग के व्याख्याता, सुश्री अंजलि चिंतामणि और डॉ. कृष्ण कुमार झा ने कार्यक्रम का संचालन किया ।

महात्मा गाँधी संस्थान से विनय गुदारी की रिपोर्ट

हिंदी संगठन द्वारा आयोजित हिंदी सप्ताह

सितंबर का महीना हिंदी भाषा को समर्पित है और हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन विश्व भर में हो रहा है । इसी हिंदीमय वातावरण को बरकरार रखते हुए मॉरीशस में हिंदी संगठन ने हिंदी सप्ताह का भव्य रूप से आयोजन किया । मॉरीशस के इतिहास में प्रथम बार के लिए लगातार एक सप्ताह तक देश के कोने-कोने में पुस्तक मेले आयोजित हुए । हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों ने उत्साह के साथ इन कार्यक्रमों में भाग लेकर हिंदी भाषा के उत्थान में अपनी भूमिका निभाई ।

सर्वप्रथम रविवार 11 सितंबर, 2011 को देश के दक्षिण प्रांत में मेबर्ग स्थित आर्य समाज मंदिर में एक कवि संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस अवसर पर शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय वसंत कुमार बनवारी, हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति जी, आर्य सभा मॉरीशस के डॉ. उदय नारायण गंगू, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा, उप महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल एवं स्थानीय कवियों के अलावा देश भर के गणमान्य साहित्यकार उपस्थित थे । विशेष रूप से समाज में हिंदी शिक्षण ग्रहण करने वाले छात्र-छात्राओं ने अपनी उपस्थिति दी । इस भव्य कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने संभाली ।

सोमवार 12 सितंबर, 2011 को गुड्लेंड्स के समाज कल्याण केंद्र में हिंदी संगठन व भारत के प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान प्रभात प्रकाशन के तत्वावधान में कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी द्वारा हिंदी पुस्तक मेले का उद्घाटन हुआ । इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री माननीय लोमेश बंधू, हिंदी संगठन की संरक्षिका लेडी पद्मा घरभरन तथा प्रभात प्रकाशन, भारत के प्रभात कुमार ने भी अपनी उपस्थिति दी । सभी वक्ताओं का मत था कि मॉरीशस में हिंदी का भविष्य स्वर्णिम है और इसके प्रति विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने के लिए ऐसे और पुस्तक मेले आयोजित करने होंगे । इस हिंदी पुस्तक मेले में छोटे-बड़े, सभी ने अपनी रुचि दिखाई । प्राथमिक तथा माध्यमिक पाठशालाओं से आए हुए छात्र एवं शिक्षक प्रसिद्ध साहित्यकारों की श्रेष्ठ रचनाओं, कोश एवं चित्रित बाल पुस्तकों से परिचित हो पाए ।

इसी प्रकार 14 एवं 15 सितंबर को फ़्लाक स्थित ओगिस्त वोलेय स्टेडियम में, 16 सितंबर को क्यूपिप स्थित मॉरिशस कॉलेज में तथा 17 सितंबर को बों आकेय स्थित गायानाथ मंदिर में पुस्तक मेले लगे।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में बों आकेय स्थित गायानाथ मंदिर में 17 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । इस मौके पर उप-प्रधान एवं सार्वजनिक मूलढांचा, राष्ट्रीय विकास इकाई, भूमि परिवहन और जहाजरानी मंत्री माननीय अनिल कुमार बेचु, कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी, भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा) श्री मीमांसक, हिंदी संगठन की संरक्षिका लेडी पद्मा घरभरन तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे ।

हिंदी संगठन ने इस वर्ष से देश में हिंदी शिक्षण एवं साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए हिंदी सेवियों को सम्मानित करने की परिपाटी की शुरुआत भी की । इस अवसर पर डॉ. अभिमन्यु अनत को उनकी साहित्यिक योगदान के लिए 'विशेष सम्मान' प्रदान किया गया । साथ ही श्री केशवदत्त चिंतामणी को हिंदी की सेवा के लिए 'हिंदी सेवा सम्मान' एवं सुश्री भानुमति नागदान को साहित्य सृजन के लिए 'साहित्य गौरव सम्मान' दिया गया। इस संदर्भ में इन को शॉल, ट्रॉफ़ी तथा प्रमाण पत्र प्रदान किये गये । हिंदी संगठन का मुख्य उद्देश्य है – मॉरीशस में बोलचाल एवं लिखित हिंदी को बढ़ावा देना । इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए हिंदी संगठन ने हिंदी नाम पट्ट की सुविधा प्रदान करने का निश्चय किया । उपस्थित महानुभावों को भी नाम पट्ट प्रदान किए गए।

संगठन के हिंदी नामपट्ट अभियान का श्री गणेश उप प्रधान मंत्री माननीय अनिल बेचू के निवास के लिए नामपट्ट प्रदान करने से किया गया

इसी अवसर पर माननीय मुकेश्वर चुनी तथा माननीय अनिल बेचु द्वारा हिंदी संगठन (एच एस यू मॉरीशस डॉट ऑर्ग) के वेब साइट का लोकार्पण हुआ । इस अवसर पर अजामिल माताबदल, रामदेव धुरंधर, हनुमान दुबे गिरधारी, सोमदत्त दलतमन, प्रभात कुमार, डॉ. राजेंद्र अरुण, डॉ. राजरानी गोबिन, डॉ. संयुक्ता भवन एवं श्री गंगाधरसिंह सुखलाल उपस्थित थे । कार्यक्रम के अंत में संगठन के कोषाध्यक्ष श्री गिरधारी जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम का संचालन संस्था की महासचिव श्रीमती अंजू घरभरन ने किया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस : 2012 के उपलक्ष्य में
विश्व हिंदी सचिवालय
''अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता''
का आयोजन कर रहा है ।

पुरस्कार :
प्रथम : 750 अमेरिकी डॉलर
द्वितीय : 500 अमेरिकी डॉलर **तृतीय : 250 अमेरिकी डॉलर**

नियम व शर्तें :

- कविता देवनागरी लिपि में हो ।
- एक प्रतियोगी से केवल एक ही कविता स्वीकृत की जाएगी ।
- कविता साफ़-साफ़ हस्तलिखित अथवा टंकित हो ।
- प्रत्येक प्रविष्टि अप्रकाशित मौलिक रचना हो एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र हो।
- प्रत्येक प्रविष्टि छद्म नाम से हस्ताक्षरित हो । प्रतियोगी का नाम, पता, फ़ोन नंबर तथा छद्म नाम एक अलग बंद लिफ़ाफ़े में डालकर उसे मुख्य लिफ़ाफ़े में संलग्न करना चाहिए । मुख्य लिफ़ाफ़े पर ***''अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता''*** लिखा होना चाहिए।
- जूरी का निर्णय अंतिम होगा ।

कविता ***10 दिसंबर, 2011*** तक
World Hindi Secretariat, Swift Lane, Forest Side, Mauritius

पहुँच जानी चाहिए ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
दूरभाष : 00-230-676 1196
फ़ैक्स : 00-230-676 1224
ई-मेल : whsmauritius@gmail.com, whsmauritius@intnet.mu

संपादकीय

सितंबर माह की विशेषताएँ कई हैं । इस माह में गणेश चतुर्थी का पर्व आता है, श्राद्ध पखवाड़े की शुरूआत होती है, पूर्वजों को याद किया जाता है और भारत के केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा इत्यादि भी मनाया जाता है ।

परंतु हर्ष का विषय यह है कि ये पर्व मॉरीशस में भी उतने ही उत्साह से मनाये जाते हैं । हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) के तत्वावधान में तथा महात्मा गांधी संस्थान के छात्रों द्वारा यह पर्व विभिन्न तरीकों से मनाया गया । भारत के संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 में हिंदी को देश की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया । मॉरीशस में गैर सरकारी संस्थानों द्वारा यह पर्व मनाया जाना भारतीय संविधान के प्रति उनके सम्मान का द्योतक है तथा हिंदी प्रेम की अद्‌भुत प्रस्तुति है । इस अवसर पर भारत और मॉरीशस, दोनों देश बधाई के पात्र हैं ।

मुझे मॉरीशस में आए लगभग दो ही सप्ताह हुए हैं और मैंने इस लघु समय में पाया कि मॉरीशस निवासी बेहिचक हिंदी में संवाद करते हैं । शब्द प्रयोग व उच्चारण भी उच्च स्तरीय है । जिस तरह से उन्होंने अपनी भाषा को जीवित रखा है, मैं उनका नमन करती हूँ । भाषा एक जीवंत वस्तु है; उसके लगातार, बिना विराम के प्रयोग से ही वह ज़िंदा रहती है । हिंदी की विशेषता है कि वह बहुत उदार भाषा है और कई बोलियों व भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करती हुई, अपने रूप में सामयिक तत्त्वों को शामिल करती हुई एक बहुत बड़े जन समुदाय की अभिव्यक्ति की भाषा है । हिंदी फिल्म जगत व टी.वी. सीरीयल ने भी विश्व भर में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया है और आज वह विश्व के कई देशों में बोली और समझी जाती है ।

हिंदी दिवस के मौके पर उपरोक्त दोनों ही संस्थानों ने कविता पाठ/सम्मेलन आयोजित किया । किसी भी भाषा का असली वाहन उसका साहित्य होता है । हमारे साहित्यकार भाषा के प्रयोग से उसे और सजाते, और संवारते हैं । निःसंदेह कहानी और नाटक में अपना आकर्षण है, परंतु कविता के लघु एवं सूरीले रूप की बात कुछ और ही है ।

इन अवसरों की विशेषता यह रही कि युवाओं और बच्चों ने बढ़चढ़ कर इनमें भाग लिया । इस अवसर पर भारत के जाने माने कवि, डॉ. बालकवि बैरागी जी के शब्दों को याद करती हूँ, वे कहा करते हैं कि, *जो पुरानी पीढ़ी अपनी नयी पीढ़ी की जड़ी को सींचती नहीं है वह अपनी ही जड़ों को सुखा देती है ।* मेरा भी यही मानना है कि जब तक युवा पीढ़ी हिंदी साहित्य से और हिंदी भाषा से जुड़ी रहेगी, उसका अस्तित्व कभी नहीं मिट सकता ।

श्रीमती पूनम जुनेजा

विश्व हिंदी सचिवालय
"अंतर्राष्ट्रीय लोगो प्रतियोगिता"

विश्व हिंदी सचिवालय, भारत तथा मॉरीशस सरकार का संयुक्त प्रयास है । सचिवालय का लक्ष्य हिंदी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रोन्नत करना तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिलाना है । सचिवालय अपने कामकाजी प्रयोग के लिए एक लोगो अपनाने के उद्‌देश्य से एक अंतर्राष्ट्रीय लोगो प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है ।

सर्वश्रेष्ठ लोगो को 3000 अमेरिकी डॉलर का पुरस्कार दिया जाएगा ।

नियम व शर्तें

1. प्रारूप - A4 आकार
2. रंग- अधिकतम चार फ्लैट कलर या क्वाड्रिक्रोमी (Full colour)
3. लोगो ब्लैक & व्हाईट संस्करण में 3x3cm के लघु आकार में भी भेजना चाहिए ।
4. प्रतियोगी या टोली की प्रविष्टि संख्या एक तक ही सीमित होगी ।
5. प्रत्येक प्रविष्टि मौलिक रचना हो एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र हो ।
6. प्रत्येक प्रविष्टि पृष्ठ के दूसरी ओर छद्‌म नाम से हस्ताक्षरित होनी चाहिए ।
   प्रतियोगी का नाम, पता, फोन नंबर तथा छद्‌म नाम एक अलग बंद लिफ़ाफ़े में संलग्न करके मुख्य लिफ़ाफ़े में डालना चाहिए । मुख्य लिफ़ाफ़े पर "लोगो प्रतियोगिता" लिखा होना चाहिए । किसी भी लिफ़ाफ़े पर डिज़ाइनर का नाम नहीं लिखा होना चाहिए।
7. लोगो के साथ एक संक्षिप्त विवरण देना चाहिए ।
8. जूरी का निर्णय अंतिम होगा ।
9. आवश्यकता पड़ने पर जूरी चयनित डिज़ाइनर से अपने लोगो में परिवर्तन अथवा सुधार लाने की मांग कर सकता है ।
10. प्रविष्टियां विषय वस्तु के अनुरूप न होने पर जूरी किसी भी विजेता की घोषणा न करने का अधिकारी है ।

नोट: (क) चयनित लोगो विश्व हिंदी सचिवालय की संपत्ति बन जाएगी ।
(ख) प्रतियोगियों को प्रविष्टियां लौटायी नहीं जाएंगीं ।

प्रविष्टियां *10 दिसंबर, 2011* तक
World Hindi Secretariat, Swift Lane, Forest Side, Mauritius
पहुँच जानी चाहिए ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
दूरभाष : *00-230-676 1196*
फ़ैक्स : *00-230-676 1224*
ई-मेल : whsmauritius@gmail.com, whsmauritius@intnet.mu

प्रधान संपादक
श्रीमती पूनम जुनेजा
संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण , सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर , श्रीमती विजया सरजु, खुशबू मति
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu / sgwhs@intnet.mu
whsmauritius@gmail.com

हिंदी दिवस

दिल्ली में पुस्तक मेला

दिल्ली में शनिवार 27 अगस्त से 17 वां दिल्ली पुस्तक मेला शुरू हुआ । मेले में भाग लेने वाले देश विदेश के लगभग 270 प्रकाशकों में से विदेशी प्रकाशकों में पाकिस्तान, चीन, अमेरिका और ब्रिटेन की संस्थाएँ शामिल थीं। पुस्तक मेले के उद्घाटन पर मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल का संदेश पढ़ा गया जिसमें उन्होंने कहा कि साहित्य और किताबों के ज़रिए लोगों तक जानकारी पहुँचाने में प्रकाशन उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । उन्होंने अपने संदेश में कहा कि भारतीय प्रकाशन उद्योग सरकारी प्रयासों को सुदूरवर्ती गाँवों और कस्बों में खासकर अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों तक पहुँचाने में सहायक की भूमिका अदा कर सकता है । आई.टी.पी.ओ. के महानिदेशक नीरज कुमार गुप्ता ने कहा कि अगले वर्ष से दिल्ली पुस्तक मेले के दौरान ई-बुक्स और अन्य गैजेट पर आधारित संस्करण का अलग से आयोजन किया जाएगा ।

एक सप्ताह तक चलने वाले दिल्ली पुस्तक मेले का आयोजन 'इंडिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइज़ेशन' (आई.टी.पी.ओ) और सह-आयोजक 'भारतीय प्रकाशक संघ' (द फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन पब्लिशर्स) ने किया ।

ई-बुक्स में कई प्रसिद्ध ग्रंथ उपलब्ध थे, पाठकों को वेबसाइट पर पुस्तकों के लिए भुगतान करने का भी अवसर दिया गया । बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तक, फ़िक्शन और गतिविधियों से संबंधित अनेक पुस्तकें प्रदर्शनी में लगी थीं। विद्वानों व पुस्तक प्रेमियों के लिए अनेक साहित्यिक व उपयोगी कृतियाँ उपलब्ध थीं ।

पूरे भारतवर्ष में असंख्य पुस्तक प्रेमियों ने इस मेले का भरपूर आनंद और लाभ उठाया ।

दिल्ली से राहुल शर्मा की रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सेमिनार संपन्न

1 से 13 अगस्त तक कुरुक्षेत्र में भारतीय विद्या संस्थान ट्रिनिडाड एंड टोबैगो द्वारा प्रवासी विश्वकवि प्रो. हरिशंकर आदेश के 75 वीं अमृतोत्सव पर अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सेमिनार का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ. बाबूराम को अंतर्राष्ट्रीय ट्रिनिडाड हिंदी शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया तथा उन्हें भारतीय विद्या संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका ज्योति और ट्रिनिडाड हिंदी समिति के परामर्श-मंडल का तीन वर्ष के लिए सदस्य मनोनित किया गया । सेमिनार में विश्व के कई देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

अंडमान-निकोबार में हिंदी दिवस का आयोजन

14 सितंबर को अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में डाक सेवा कार्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । श्री कृष्ण कुमार यादव ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । कार्यक्रम में सर्वश्री दीनबंधु मित्र, पी.बी. अखिलंदम, अमियभूषण मजूमदार, राजेंद्र सिंह बेदी, महाश्वेता देवी, आदि उपस्थित थे ।

साहित्य अमृत से साभार

लखनऊ में पुस्तक मेला

''लोग कहते हैं कि हिंदी किताबों में अब पाठकों की रुचि नहीं रही । मैं 30 वर्षों से देख रहा हूँ, हिंदी प्रकाशकों के परिवार की नई पीढ़ी भी इसी व्यवसाय से जुड़कर पनप रही है । यदि संकट होता तो प्रकाशकों के बंगले व गाड़ियाँ और बड़े न हो गए होते ।''

शुक्रवार 16 सितंबर से लखनऊ के मोतीमहल लॉन में प्रारंभ हुए नवम राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए यह बातें साहित्यकार नरेंद्र कोहली ने कहीं । उन्होंने कहा कि यदि कोई लेखक नहीं पढ़ा जा रहा है तो उसे यह सवाल खुद से करना चाहिए कि क्या वह वास्तव में इस समाज का प्रतिनिधि है ? यदि लेखक का सरोकार समाज के साथ है तो फिर पाठक भी । यह सही है कि प्रारंभ से अंग्रेज़ी पढ़ने वाले बच्चे कैसे हिंदी या किसी अन्य भाषा का साहित्य पढ़ेंगे । हालाँकि इसके बाद भी हिंदी भाषी इतने हैं कि लेखक को पलटकर अपनी तरफ़ देखना चाहिए कि वह कहीं खुद तो बाधा नहीं बन रहा । कोहली जी की एक रचना 'मत्स्यगंधा' का विमोचन पुस्तक मेले में हुआ ।

याहू जागरण से साभार

नागालेंड में हिंदी दिवस

14 सितंबर को दीमापुर में सरकारी हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (Government Hindi Teachers Training Institute) द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे एन. खेवितो सेमा । उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि नागालेंड में अनेक जनजातीय बोलियाँ हैं जिनके व्याकरण के विकास में हिंदी द्वारा महत्वपूर्ण योगदान मिल सकता है ।

खेवितो सेमा जी ने बताया कि अन्य देशों के लोग भारत में आकर हिंदी सीखते हैं । फिर क्यों न हिंदी सीखी जाए और नागालेंड में इस भाषा को प्राथमिकता दी जाए ! उन्होंने आगे बताया कि बहुत जल्द प्राथमिक स्कूलों तथा कॉलेजों में हिंदी अध्यापकों को लिया जाएगा और हिंदी शिक्षकों के लिए 1,379 पद उपलब्ध हैं ।

उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने अपने-अपने अनमोल विचार व्यक्त किए तथा प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात राष्ट्रगान से समापन-समारोह हुआ ।

नागालेंड में ही त्वेन्सेंग ज़िले में 15 सितंबर को गोवर्न्मेंट हायर सेकन्डेरी स्कूल के सभागार में आर.बी. हिंदी संस्थान तथा नागालेंड हिंदी शिक्षक संघ (ANHTU) द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुशील कुमार पाटिल जी ने माँग की कि यहाँ की जनजातियाँ आगे बढ़ें तथा भारत की आधिकारिक भाषा हिंदी सीखें ताकि संचार और विकास में वृद्धि हो।

कार्यक्रम में उपस्थित अन्य महानुभावों ने भी अपने संदेश पढ़े । उसके पश्चात अनेक स्कूलों द्वारा देश-भक्ति के गीत, लोक-गीत तथा शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए गए । उसके पश्चात उन विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया जिन्होंने हिंदी निबंध, श्रुतिलेख, स्वरचित कविता आदि प्रतियोगिताओं मे भाग लिया था । अहेली सेमा जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

नागालेंड पोस्ट डॉट कॉम

सूरीनाम में हिंदी के लिए सहयोगपूर्ण वातावरण

बाएँ से भारतीय राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी, डॉ. विमलेश कांति वर्मा तथा डॉ. रनाता द . बीस

जून, 2011 में हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. विमलेश कांति वर्मा 20 दिनों के लिए सूरीनाम यात्रा पर गए। इस दौरान उन्होंने विभिन्न स्थानों में हिंदी अध्यापकों की कार्यशालाएँ आयोजित कीं, साथ ही ***"सरनामी, सूरीनाम की राजभाषा, रामायण की प्रासंगिकता"*** जैसे विषयों पर गोष्ठियों को भी संबोधित किया । इन 20 दिनों में डॉ. वर्मा ने सूरीनाम के साहित्यकारों, शिक्षकों, हिंदी सेवियों से भेंट की तथा उन्हें प्रोत्साहित करके हिंदी के लिए सहयोगपूर्ण वातावरण सृजित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया ।

संपूर्ण कैरीबियाई क्षेत्र में सूरीनाम ही एक ऐसा देश है जहाँ शर्तबंदी मज़दूरों के आगमन के 138 वर्ष बाद भी उनकी तीसरी व चौथी पीढ़ियाँ दैनिक बोलचाल में हिंदी भाषा (सरनामी हिंदी) का प्रयोग करती हैं और हर वर्ष 600 से अधिक विद्यार्थी हिंदी परीक्षा में सफ़ल होते हैं । यहाँ लगभग 80 हिंदी शिक्षक नि:शुल्क हिंदी शिक्षण प्रदान करते हैं ।

16 जून को डॉ. विमलेश कांति वर्मा सूरीनाम पहुँचे । कार्यशालाओं व कार्यक्रमों का सूरीनाम की जनता ने हृदय से स्वागत किया । प्रेस के साथ व इसके बाद होने वाली लगभग सभी बैठकों व कार्यक्रमों में भारत के राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी जी की उपस्थिति ने कार्यक्रमों को गरिमा प्रदान की । आजकल सूरीनाम में भाषा, राजभाषा व भाषा के मानकीकरण पर ज़ोरदार बहस छिड़ी हुई है और डॉ. वर्मा के आगमन से यहाँ के नीति निर्धारकों को भारत की राजभाषा नीति को जानने-समझने का अवसर मिला । इस यात्रा के दौरान हिंदी शिक्षण के साथ-साथ हिंदी प्रचार-प्रसार संबंधी कई अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए ।

राजभाषा नीति के पूर्ण ज्ञाता डॉ. वर्मा एक सुप्रसिद्ध भाषाविद, हिंदी विद्वान, कोशकार हैं जिन्हें देश-विदेश में 40 से अधिक वर्ष का हिंदी शिक्षण का अनुभव है और यही कारण है कि निर्धारित सरकारी दस दिन समाप्त होने पर भी डॉ. वर्मा को पाँच और महत्वपूर्ण भाषणों के लिए आमंत्रित किया गया ।

हिंदी शिक्षण में सुधार के उद्देश्य से सूरीनाम के पाँच ज़िलों – वानिका, पारामारीबो, सरमक्का, कौमवेना व निकेरी में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जिनमें व्याकरण, उच्चारण, वर्तनी की बारीकियों पर चर्चा की गई और शिक्षकों की कठिनाइयों का निवारण करने का प्रयास किया गया जिससे सभी शिक्षकों में आत्मविश्वास बढ़ा और साथ ही शिक्षण को रोचक बनाए रखने के लिए भी कई बहुमूल्य सुझाव मिले ।

प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों की श्रृंखला में 18 जून को आयोजित पहला कार्यक्रम ***"हिंदी कल आज और कल"*** बहुत सार्थक रहा क्योंकि इसमें सूरीनाम में हिंदी के विकास में योगदान दे रही सभी संस्थाओं ने भागीदारी दी ।

19 जून को वरिष्ठ हिंदी सेवी व साहित्यकार पंडित अमरसिंह रमण के निवास स्थान पर सूरीनाम साहित्य मित्र संस्था के सदस्यों ने भाग लिया ।

21 जून को सूरीनाम हिंदी परिषद के प्रांगण में ***"सरनामी व हिंदी को सशक्त करने में सरनामी की भूमिका"*** विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गई । इस अवसर पर होलैंड के भाषाविद और सरनामी के पक्षधर श्री मोती मारहे ने ***"सरनामी भाषा की उत्पत्ति व स्थिति"*** पर अपने विचार प्रस्तुत किए और डॉ. वर्मा ने ***"हिंदी की बोलियाँ और हिंदी को सशक्त करने में सरनामी की भूमिका"*** पर बात की । डॉ. वर्मा के सरनामी अंग्रेज़ी शब्दकोश तैयार करने के सुझाव को बहुत सराहा गया ।

22 जून को डॉ. विमलेश कांति वर्मा को विश्वविद्यालय में भारत की राजभाषा नीति पर एक विशेष भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया, जिसमें सूरीनाम के गृह मंत्री व परमानेंट सेक्रेटरी और भारत के राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी सहित अनेक नीति निर्धारक और नवगठित भाषा समिति (लैंग्वेज काउंसिल कमिटी) के अध्यक्ष डॉ. एरसेल व समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे ।

23 जून को संस्था माता गौरी व सूरीनाम साहित्यिक संघ (कल्चरल यूनियन सूरीनाम) के सहयोग से माता गौरी सभागार में ***"रामायण की प्रासंगिकता और प्रतीकात्मकता"*** विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

कार्यक्रम के अंत में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के छात्रों ने रामस्तुति प्रस्तुत की ।

सूरीनाम से भावना सक्सेना की रिपोर्ट

अब हिंदी में चहकेगी ट्विटर की चिड़िया

प्रसिद्ध माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने हिंदी संस्करण का विमोचन किया । यह सुविधा हिंदी का प्रयोग करने वालों को उनकी मातृभाषा में अपने विचारों को ट्विट करने का अवसर देता है । ट्विटर के रिपोर्टों के अनुसार आने वाले दिनों में यह सुविधा हिंदी के अतिरिक्त फ़िलिपिनो, मलय और चीनी भाषाओं में भी प्रदान की जाएगी । माइक्रोब्लॉगिंग भविष्य में इस सुविधा को 17 भाषाओं में प्रदान करने की योजना बना रहा है । ट्विटर पर कॉनरेड ऑल्डकॉन हर्ष के साथ लिखते हैं : "We just launched Twitter in Hindi on Hindi day! " हिंदी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए ट्विटर ने हिंदी में भी अपनी सेवा शुरू कर दी ।

अमेरिका में हिंदी दिवस

अमेरिका के भारतीय उच्चयोग ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 14 सितंबर, 2011 को एक समारोह का आयोजन किया । इस अवसर पर वाशिंग्टन डी.सी. की कई शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक एवं छात्र-गण उपस्थित थे । साथ ही साथ मौके पर हिंदी कवि, लेखक, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संस्थान के सदस्य तथा अन्य हिंदी सेवी उपस्थित थे ।

उच्चायुक्त निरुपमा राव ने कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत के लिए हिंदी दिवस बहुत मायने रखता है । उन्होंने आगे बताया कि भारत की राज भाषा होने के नाते हिंदी भाषा के विकास पर ज़ोर दिया जा रहा है और साहित्य, रंगमंच तथा सिनेमा उन महत्वपूर्ण प्रयासों में से हैं जो भारत की सांस्कृतिक विरासत को उजागर कर रहे हैं । उच्चायुक्त निरुपमा राव ने उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को धन्यवाद किया जो अमेरिका में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय रूप से अपना योगदान दे रहे हैं ।

Indianembassy.org

मॉरीशस में हिंदी गीत प्रतियोगिता

जून महीने में हिंदी संगठन द्वारा संगीत दिवस, जनमानस से जुड़ने के प्रयास व भाषा एवं रचनात्मकता का अद्वितीय संगम इस प्रतियोगिता में दिखा।

चार सप्ताह तक देश के चहूँ ओर हिंदी गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इसके उपरांत 2 जुलाई, 2011 को 'सेर्ज़ कोंस्ताँतें थियेटर', वाक्वा में कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से प्रतियोगिता का अंतिम चरण आयोजित किया गया । इसमें दस सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों ने भाग लेकर भाषा को सुर-ताल में सजाकर एक अद्वितीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार सुकुमारी धर्मेश्वरी नोबिन, द्वितीय पुरस्कार श्री माहेन हरीपोल तथा तृतीय पुरस्कार सुश्री सुभाषिनी देमका को मिले । भाषा को ध्यान में रखते हुए स्वरचित गीत के लिए पुरस्कार श्रीमती तारामति साधुचंद ने प्राप्त किया । कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी जी के कर कमलों द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को स्टेट बैंक मॉरीशस की ओर से अतिरिक्त 1000 रुपये प्रदान किए गए ।

कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी एवं भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (भाषा एवं शिक्षा), श्री मीमांसक जी, हिंदी भाषा प्रेमियों तथा सुरताल का ज्ञान रखने वालों ने अपनी उपस्थिति से प्रतिभागियों का प्रोत्साहन और बढ़ाया ।

श्रीमती अंजू घरभरन , महासचिव, हिंदी संगठन

स्वागतम्

महामहिम श्री. टी. पी. सीताराम, भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस

09 सितंबर, 2011 को महामहिम श्री. टी. पी. सीताराम ने मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त का पद ग्रहण किया । विश्व हिंदी सचिवालय भारत और मॉरीशस सरकार का संयुक्त प्रयास है । दोनों सरकार इसके कार्यों की देख-रेख पूरी लगन से करती हैं । मॉरीशस में भारतीय सरकार का प्रतिनिधित्व भारतीय उच्चायुक्त करते हैं जो सचिवालय की शासी परिषद व कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी होते हैं । सचिवालय को यही आशा है कि उनके द्वारा भारत और मॉरीशस के ऐतिहासिक संबंध और मज़बूत होंगे तथा हिंदी के उन्नयन का अभियान सुदृढ़ होता जाएगा ।

श्रीमती पूनम जुनेजा, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय

श्रीमती पूनम जुनेजा ने 29.08.2011 से विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में महासचिव का पदभार संभाला । मॉरीशस आगमन पर विश्व हिंदी सचिवालय की नई महासचिव श्रीमती जुनेजा ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, कला एवं संस्कृति मंत्री तथा मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति के साथ शिष्टाचार भेंट की । इन शिष्टाचार भेंटों के दौरान सभी ने श्रीमती जुनेजा का हार्दिक स्वागत करते हुए अपनी शुभकामनाएँ प्रकट कीं कि श्रीमती जुनेजा सचिवालय के सपनों को साकार करने में अपना पूरा योगदान देंगी ।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा विश्व हिंदी समाज की ओर से **महामहिम श्री टी. पी. सीताराम** तथा **श्रीमती पूनम जुनेजा** का हार्दिक स्वागत ।

हिंदी लेखक संघ स्वर्ण जयंति विशेष
मॉरीशस में साहित्य संवाद

मॉरीशस में हिंदी लेखक संघ की 50 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित गतिविधियों की श्रृंखला में शनिवार 27 अगस्त, 2011 को हिंदी संगठन तथा इंदिरा गाँधी भारतीय संस्कृतिक केंद्र के तत्वावधान में आयोजित साहित्य संवाद में संघ के मान्य प्रधान श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ व विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल मुख्य वक्ता थे, जिन्होंने ***"विदेशों में हिंदी साहित्य : सर्वेक्षण व मूल्यांकन"*** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया ।

मुख्य वक्ताओं ने विदेशों में हिंदी साहित्य की चर्चा करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि आज वैश्वीकरण की होड़ है और इस नव उपनिवेशकालीन युग अर्थात् इकोनॉमिक कोलोनियलिज़्म के युग में हिंदी भाषी जहाँ बसने जाता है वह एक नए सांस्कृतिक ढांचे में प्रवेश करता है । ऐसे में वह नए परिवेशों और परिस्थितियों का सामना करते हुए जब एक ओर एलिएनेशन और दूसरी ओर नए अनुभवों का साक्षात्कार करता हुआ साहित्य सृजन करता है तो उसका साहित्य और गतिशील हो जाता है । आज प्रवासी हिंदी साहित्य उन हज़ारों, लाखों भारतीयों के कारण फैली है जो आजीविका की तलाश में देश से दूर जा बसे हैं और अपने आप को उस नए सांस्कृतिक ढांचे में ढालने की कोशिश में जीवन व्यतीत कर रहे हैं । इससे हिंदी साहित्य और समृद्ध होता जा रहा है ।

वक्ताओं द्वारा हिंदी के लिए काम कर रही अनेक संस्थाओं की चर्चा में भारत एवं मॉरीशस सरकार द्वारा संचालित संस्थाओं तथा स्वयंसेवी साहित्यिक संस्थाओं की चर्चा हुई जिनकी संख्या नियमित रूप से बढ़ती जा रही है ।

अंत में आधुनिक सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में प्रकाशन का प्रश्न भी उठा । इस बात पर संतुष्टि व्यक्त की गई कि आज प्रवासी साहित्य वेब पत्रिकाओं के माध्यम से हर व्यक्ति की पहुँच में हैं । नेटवर्किंग के माध्यम से प्रवासी साहित्य तथा विदेशों में हिंदी संस्थाएँ एक दूसरे से जुड़ भी पाई हैं ।

कार्यक्रम में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा एवं भाषा) श्री मीमांसक, इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका सुश्री अमीता शॉ एवं मॉरीशस के हिंदी सेवी उपस्थित हुए ।

मॉरीशस से संध्या नवोसा की रिपोर्ट

सिडनी में हिंदी मेला

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 11 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम के आयोजन में अनेक हिंदी शैक्षिक व सांस्कृतिक संस्थाओं का सहयोग रहा । पहले सत्र में बाल भारती हिंदी स्कूल के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया । एक काव्य पाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया । लगभग पचास छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिसे गणमान्य अतिथियों ने खूब सराहा ।

दूसरे सत्र में ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की ड्रीम टाइम कहानियों की एनिमेशन फ़िल्मों की डीवीडी का विमोचन किया गया । इसका अनुवाद सिडनी की लोकप्रिय कवियित्री रेखा राजवंशी ने किया है और सिडनी के जाने-माने फ़िल्म कलाकार और फ़िल्म निर्देशक अनुपम शर्मा ने इसमें अपनी आवाज़ दी है। फ़िल्म निर्माता कीथ इस अवसर पर उपस्थित थे और सिडनी के होर्नस्बी क्षेत्र के मेयर निक बर्मन ने इसका विमोचन किया ।

इसके पश्चात कवि सम्मेलन प्रारंभ हुआ जिसमें स्थापित कवियों के साथ-साथ कई नए कवियों ने भी काव्य पाठ किया । प्रारंभ में ऋचा श्रीवास्तव ने महाकवि प्रसाद की कविता पढ़ी, फिर अनेक कवियों ने अपनी कविताएँ पढ़कर श्रोताओं का मन मोह लिया । इनमें श्री सुभाष शर्मा, सुरेश मक्कड़, सिद्धांत नकरा, अजोय घोष, अनु छाबड़ा, प्रदीप उपाध्याय आदि शामिल थे । कवियों को शॉल ओढ़ाकर उनका सम्मान किया गया । हिंदी के क्षेत्र में जानी-मानी माला मेहता, ऑस्ट्रेलिया हिंदी कमेटी के ताराचंद जी और इलासा की रेखा राजवंशी ने पूरे कार्यक्रम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

रेखा राजवंशी

रियूनियन द्वीप में हिंदी दिवस

फ्रांस शासित रियूनियन द्वीप में पहली बार हिंदी की पताका पहुँची है । यहाँ पर भारतीय मूल के लोगों की लगभग 225,000 आबादी है जिनमें तमिल व गुजराती मूल के भारतवंशी प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं । यहाँ भाषाई विभिन्नता न होकर सभी लोग फ्रेंच अथवा क्रियोल ही बोलते हैं । यहाँ हिंदी का रास्ता गुजराती मूल के भारतवंशियों में सम्मिलित मुस्लिम व सुनार समुदाय में बची भाषाएँ उर्दू व गुजराती के बीच से निकलता है ।

यहाँ की राजधानी सेंट डेनिस के आंदी विला में यह बहुत ही रोमांचकारी पल था जब हिंदी दिवस समारोह में सम्मिलित होने के लिए लगभग 400 ऐसे लोग एकत्रित थे जिनमें से कुछ तमिल जानते थे, कुछ उर्दू, कुछ गुजराती, कुछ अंग्रेज़ी और सभी फ्रेंच । कार्यक्रम का शुभारंभ फ्रांस एवं भारत के राष्ट्रगीत से हुआ । मंच पर मुख्य अतिथि काउंसल श्री जीनों पोनिन बल्लोम, विशिष्ट अतिथि राकेश पाण्डेय, संपादक प्रवासी संसार-भारत, भारतीय कौंसलावास के अधिकारी श्री महाबीर रावत, आयोजक श्री रजनीकांत जगजीवन, अध्यक्ष, एन.आर.आइ., रियूनियन, श्री आंदी व श्री उमेश कुमार थे । कुछ श्रोताओं द्वारा हिंदी बिल्कुल ही न समझने के कारण श्री उमेश कुमार ने भाषणों का अनुवाद हिंदी से फ्रेंच में किया ।

भारत से पधारे श्री राकेश पाण्डेय ने कहा जैसे अंग्रेज़ों की प्रतिनिधि भाषा अंग्रेज़ी है, आपके फ्रांस की प्रतिनिधि भाषा फ्रेंच है, ऐसे ही हमारे भारत में अनेक बोलियाँ-भाषाएँ होते हुए भी हमारी भाषाई पहचान हिंदी ही है । यहाँ आप सभी भारत की भाषाई पहचान हिंदी के महत्व को रेखांकित करने के लिए एकत्रित हुए हैं, आप सभी को बधाई । इसके साथ ही उन्होंने विदेशों में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डाला । इसके बाद भारतीय कौंसलावास का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री महाबीर रावत ने हिंदी के भारत में संवैधानिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्थानीय लोगों को रियूनियन में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए पुस्तकें व अन्य सहायता का आश्वासन दिया और कहा कि भारतीय कौंसलावास उनके साथ है । साथ ही श्री राकेश पाण्डेय एवं श्री रजनीकांत के इस प्रयास को भी सराहा जिसके कारण रियूनियन में हिंदी दिवस संभव हो पाया । मुख्य अतिथि श्री जीनों ने हिंदी दिवस के आयोजन की शुरुआत को महत्वपूर्ण बताया और अगले वर्षों में किये जाने की संकल्पना को मूर्त रूप देने की बात कही ।

राकेश पाण्डेय

हिंदी भाषा उस समुद्र-जल-राशि की तरह है
जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों । *वासुदेवशरण अग्रवाल*

हिंदी साहित्य की दुनिया बहुत बड़ी है – तेजी साकाता

" भक्ति साहित्य सिर्फ हिंदी या हिंदुस्तान का साहित्य नहीं है, बल्कि यह मानवता का साहित्य है । मानवता के साथ उसका गहरा संबंध है । उसे पढ़ने और समझने का अर्थ है, मानव और उसके सभ्यता के इतिहास को जानना।" ये बातें हिंदी के प्रसिद्ध जापानी विदेशी विद्वान प्रो. तेजी साकाता ने भारतीय भाषा केंद्र द्वारा " भक्ति के अर्थ " पर 18 सितंबर 2011 को आयोजित व्याख्यान में कहीं । प्रो. साकाता आजकल जापान के तोक्यो स्थित ताकुषाकु विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफ़ेसर हैं और शोध के सिलसिले में प्रतिवर्ष भारत आते रहते हैं । उन्होंने कहा कि " हिंदी साहित्य की दुनिया बहुत बड़ी है । भारत और जापान का धार्मिक जीवन एक जैसी परंपराओं से प्रभावित है । हम बुद्ध को भी मानते हैं और कृष्ण को भी । इनपर लिखा गया साहित्य जीवन को समझने में मदद करता है । ये हमारी दुनिया और हमारे अंदर मौजूद मानवीय भक्ति की चेतना को बढ़ाते हैं ।" उन्होंने यह भी बताया कि जापान में भी भक्ति साहित्य से मिलता-जुलता साहित्य है और वहाँ के लोग भी इस साहित्य को पढ़ने में दिलचस्पी ले रहे हैं ।

भारतीय भाषा केंद्र की ओर से आयोजित इस व्याख्यान में प्रो. साकाता की बातचीत को आगे बढ़ाते हुए ताषकंद के प्राच्य विद्या संस्थान से आई डॉ. उल्फत मुहिबा ने हिंदी के वार्ता साहित्य में चौरासी वैष्णवन की वार्ता का उल्लेख किया और कहा कि " भक्ति का अर्थ केवल भगवान की भक्ति नहीं है, भक्ति का अर्थ बहुत ही व्यापक है और उस काल के सभी कवियों के यहाँ भक्ति का अर्थ अलग-अलग है । जैसे मलूकदास के लिए भक्ति का अर्थ था - लोगों की सेवा करना । सभी लोगों के बीच प्रेम, समानता का भाव पैदा करना ही भक्ति साहित्य का मुख्य लक्ष्य था । "

अतिथि वक्ताओं के व्याख्यान के बाद दोनों विदेशी विद्वानों ने छात्रों के विचारोत्तेजक प्रश्नों का जवाब भी दिया । कार्यक्रम के आरंभ में चर्चित युवा आलोचक एवं भारतीय भाषा केंद्र के डॉ. देवेंद्र चौबे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भक्ति को केवल धर्म से नहीं जोड़ा जाना चाहिए । भक्ति ने मध्यकालीन समाज की जड़ता को तोड़ते हुए लोगों को धर्म और संप्रदाय की जड़ों से मुक्त किया । उन्हें बृहत्तर समाज से जोड़ा । आगे बढ़ने का मार्ग खोला। कार्यक्रम के अंत में एम. फ़िल. हिंदी की शोधछात्रा शीला आर्य ने केंद्र के छात्रों की तरफ़ से अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया ।

अजय कुमार यादव और देबीना अक्षयबर, शोधछात्र, जे. एन. यू., भारत

डॉ. राधेश्याम शुक्ल को "रामनाथ गोइन्का पत्रकार शिरोमणि" प्रदत्त

21 अगस्त की शाम को पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित एक भव्य पुरस्कार एवं सम्मान समारोह में हिंदी दैनिक 'स्वतंत्र वार्ता' के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल को प्रतिष्ठित "रामनाथ गोइन्का पत्रकार शिरोमणि पुरस्कार" प्रदान किया गया । स्मरणीय है कि 62 वर्षीय डॉ. राधेश्याम शुक्ल अपने विद्यार्थीकाल से ही सोद्देश्य पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं तथा विगत 13 वर्षों से हैदराबाद में रहकर समाचार पत्र संपादक के अतिरिक्त अपने व्याख्यानों और लेखों के माध्यम से हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं ।

इस समारोह में वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार डॉ. बाल शौरि रेड्डी को उनके समग्र लेखन के लिए "भाभीश्री रमादेवी गोइन्का सारस्वत सम्मान" तथा आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी के अध्यक्ष डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद को डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के हिंदी से तेलुगु में अनुवाद के लिए "गीतादेवी गोइन्का हिंदी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने तीनों हिंदी साहित्यकारों को पुरस्कार प्रदान किया।

पुरस्कार के स्वीकृति भाषण में डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने कहा कि ***भाषा और साहित्य वस्तुत: सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय संस्कृति के संवाहक ही नहीं संरक्षक और संप्रेषक भी होते हैं, अत : उत्तर और दक्षिण के सतही भेदों को भुलाकर हिंदी को समस्त भारतीय भाषाओं के प्रतीक के रूप में आधुनिक विश्व के समक्ष समग्र भारत की पहचान बनकर उभरना होगा***। डॉ. शुक्ल ने इस कार्य के लिए बुद्धिजीवियों के स्तर पर एक बड़े सामाजिक आंदोलन की आवश्यकता बताते हुए सभी भाषाओं के साहित्यकारों का आह्वान किया कि वे इस विचार को मूर्त रूप दें ।

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष प्रसिद्ध कला-संग्राहक एवं समीक्षक जगदीश मित्तल और विशेष अतिथि एम. उपेंद्र के अतिरिक्त पुरस्कारदाता संस्था के श्यामसुंदर गोइन्का, ललिता गोइन्का, ओम प्रकाश गोइन्का, संजय गोइन्का तथा बालकृष्ण गोइन्का मंच पर उपस्थित थे ।

हैदराबाद से ऋषभदेव शर्मा की रिपोर्ट

वातायन : पोएट्री ऑन साउथ बैंक सम्मान समारोह – 2011

नेहरु सेंटर और यू.के. के हिंदी समिति के तत्वावधान एवं बैरोनैस फ़्लैदर के संरक्षण में 30 जून को लंदन के हाउस ऑफ़ लोर्ड्स के एक ऐतिहासिक कमरे में **"वातायन : पोएट्री ऑन साउथ बैंक सम्मान समारोह"** का आयोजन किया गया । समारोह में प्रसिद्ध कवि और लेखक श्री प्रसून जोशी एवं श्री जावेद अख्तर को वातायन अवार्ड से सम्मानित किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध अभिनेत्री शबाना आज़मी, लोर्ड देसी एवं डॉ. मधुप मोहता ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई ।

लेखक, संगीतकार और फ़िल्मकार डॉ. संगीता दत्ता ने संचालन की बागडोर सुविज्ञतापूर्वक संभाली । रीना भारद्वाज (गायिका 'यह रिश्ता') द्वारा सरस्वती वंदना से समारोह का आगाज़ हुआ । लेखक, फ़िल्मकार नसरीन मुन्नी कबीर ने प्रसून जोशी के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला । प्रसून जोशी के गीत 'तारे ज़मीं पर' का अंग्रेज़ी अनुवाद और प्रस्तुति कवयित्री, लेखक और फ़िल्मकार रूथ पडेल ने की । तो दूसरी ओर प्रसून जोशी के एक दूसरे गीत 'मेरी माँ' की प्रशंसनीय प्रस्तुति कवयित्री और लेखक इंडिया रस्सल ने की ।

समारोह की अध्यक्षता कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं लेखक डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव ने की तथा प्रस्तावना यू.के हिंदी समिति के अध्यक्ष और पुरवाई के संपादक डॉ. पद्मेश गुप्त की रही । वातायन की संस्थापक अध्यक्ष पुरस्कार स्वीकार करते हुए जावेद अख्तर ने वातायन संस्था को बधाई देते हुए कहा कि भारतीय साहित्य के विश्वव्यापी प्रचार और प्रसार में वातायन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । विशेषत: आज के दौर में, समाज के हित के लिए अच्छा साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है, जबकि आदमी ने धन-दौलत के लालच में आकर अपनी परंपराओं और मान्यताओं को दाव पर लगा दिया है ।

दिव्या माथुर ने सभी मेहमानों का धन्यवाद किया । सम्मान समारोह के दौरान प्रसून जोशी ने 'धूप के सिक्कों' के साथ अपनी कई अन्य कविताएँ अपनी दिलकश आवाज़ में सुनाईं । शब्दों की जादूगरी के साथ-साथ प्रसून जोशी जो मधुर कंठ के भी मालिक हैं, अपने कुछ गीतों को स्वर में गाकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया । जावेद साहब एक पूर्ण शख्सियत के मालिक हैं; गहरी आवाज़ और मोहक अंदाज़ में उन्होंने अपनी 'वक्त' और 'शतरंज' जैसी कविताओं से सबका मन मोह लिया । समारोह के पश्चात एक भव्य भोज के साथ इस सितारों भरी खूबसूरत शाम का समापन हुआ ।

शिखा वार्ष्णेय की रिपोर्ट

कोपनहेगन में "प्राइड ऑफ इंडिया" सम्मान

शनिवार 20 अगस्त को इंडियन कलचरल सोसाइटी, डेनमार्क ने 65वें स्वतंत्रता दिवस समारोह पर मूल देहरादून निवासी लेखिका अर्चना पैन्यूली को "प्राइड ऑफ इंडिया" पुरस्कार से सम्मानित किया । संस्था के अध्यक्ष सुखदेव सिंह संधू ने कहा कि इंडियन कलचरल सोसाइटी डेनमार्क ने गत वर्ष निर्णय लिया था कि 15 अगस्त के राष्ट्रीय समारोह में उनकी संस्था डेनमार्क में रहनेवाले भारतीय को उनकी उपलब्धियों के लिए "प्राइड ऑफ इंडिया" सम्मान से सम्मानित करेगी । इस वर्ष उनकी संस्था ने यह पुरस्कार अर्चना पैन्यूली को उनके लेखन, हिंदी की सेवा एवं भारतीय समुदाय को योगदान प्रदान करने के लिए दिया है । भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित डेनमार्क में बसे भारतीयों पर लिखा उनका उपन्यास 'वेयर डू आई बिलांग' अब रूपा पब्लिकेशन द्वारा अंग्रेज़ी में प्रकाशित होने जा रहा है ।

अर्चना पैन्यूली ने कहा कि किसी संस्था द्वारा किसी लेखक,कवि या कलाकार को सम्मानित करना उसे एक नवीन ऊर्जा से भर देता है जिससे उसका साहित्य सृजन थमता नहीं । उन्होंने देश व समाज पर रचित अपनी दो व्यंग्यात्मक कविताएं सुनाकर श्रौताओं को भाव विभोर कर दिया । इस अवसर पर राजस्थानी लोक नृत्य तथा देशभक्ति के हिंदी गीत भी प्रस्तुत किए गए । इस समारोह में डेनमार्क निवासी व अनेकों भारतीय उपस्थित थे ।

बोलियाँ ही हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति है । एक हिंदी वह है जो अपने मानक रूप में अपनी सरलता और नियमबद्धता के कारण राष्ट्रीय व अंतार्राष्ट्रीय भाषा भी है । दूसरी हिंदी वह है जो आंचलिक और क्षेत्रीय प्रकार की है । यह हिंदी मानक हिंदी के लिए शब्दों और प्रयोगों का अक्षय भंडार है । मानक हिंदी का वही अंश गृहित होता है जो इसके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बोधगम्य होने में बाधक नहीं है । नमनीयता और अनुशासनबद्धता ऐसे परस्पर विरोधी ध्रुव हैं जिनके बीच दुनिया भर की बड़ी भाषाएँ काम करती हैं । हिंदी का सच भी यही है ।

डॉ. रामविलास शर्मा

कविता कोश सम्मान समारोह – 2011

7 अगस्त, 2011 को कविता कोश जयंती समारोह का आयोजन किया गया। जयपुर में जवाहर कला केंद्र के कृष्णायन सभागार में प्रथम कविता कोश सम्मान समारोह संपन्न हुआ । समारोह के संयोजक और कविता कोश के संपादक श्री प्रेमचंद गांधी ने उपस्थित कवियों, श्रोताओं और समारोह के सहभागियों का स्वागत करते हुए कहा यह दिन हिंदी कविता के इतिहास की एक बड़ी परिघटना है । पहली बार कविता कोश को इंटरनेट की दुनिया से निकाल कर सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा है और हमारे इस समारोह में उपस्थित दो-ढाई सौ लोगों में मात्र वे कवि ही उपस्थित नहीं थे जो कविता कोश में शामिल हैं बल्कि बहुत से पत्रकार, हिंदी प्रेमी, छात्र, साहित्यकार एवं जनता के अन्य वर्गों के लोग भी उपस्थित थे ।

कविता कोश के संस्थापक और प्रशासक श्री ललित कुमार ने उपस्थित जन समुदाय को कविता कोश के इतिहास और कविता कोश वेबसाइट के उद्देश्यों से परिचित कराया । अपने वक्तव्य में ललित जी ने कविता कोश के विकास में सामुदायिक भावना के महत्व पर बल दिया और बताया कि इस तरह की वेबसाइट का अस्तित्व सिर्फ़ सामुदायिक प्रयासों से ही संभव है । एक अकेला व्यक्ति इस तरह की वेबसाइट नहीं चला सकता । इसीलिए शुरू में उन्होंने अकेले इस परियोजना को शुरू करने के बावजूद धीरे-धीरे लोगों को कविता कोश से जोड़ा और कविता कोश टीम की स्थापना की । अब यह टीम ही कविता कोश का संचालन करती है ।

कविता कोश ने अपनी इस पंच वर्षीय जयंती के अवसर पर इस समारोह में दो वरिष्ठ कवियों (बल्ली सिंह चीमा और नरेश सक्सेना) एवं पाँच युवा कवियों (दुष्यन्त, अवनीश सिंह चौहान, श्रद्धा जैन, पूनम तुषामड़ और सिराज फ़ैसल ख़ान) को सम्मानित किया । कविता कोश के प्रमुख योगदानकर्ताओं को कविता कोश पदक एवं सम्मानपत्र देकर सम्मानित किया गया ।

हिंद युग्म से साभार

मीरा स्मृति सम्मान समारोह 2011 संपन्न

7 अगस्त, 2011 को इलाहाबाद में मीरा स्मृति सम्मान समारोह 2011 संपन्न हुआ । यह समारोह मीरा फ़ाउण्डेशन तथा साहित्य भंडार, इलाहाबाद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था । इस अवसर पर प्रो. जगन्नाथ पाठक, श्री अमरकांत, प्रो. अरविंदाक्षन, श्री गिरीश पाण्डे एवं प्रो. उषा यादव को मीरा-स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया । विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के कुल सचिव डॉ. चन्द्रकांत त्रिपाठी उपस्थित थे । समारोह के प्रथम सत्र में प्रसिद्ध साहित्यकार उपेन्द्रनाथ अश्क पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए तथा पाँच हिंदी पुस्तकों का विमोचन किया गया, 'तू फ़ू'- श्री दूधनाथ सिंह, 'हिंदी कथा साहित्य : विचार और विमर्श'- श्री चंचल चौहान, 'आपातकाल : हिंदी साहित्य और पत्रकारिता' – श्री अमरेन्द्र कुमार शर्मा, 'कस् में हीरालाल' – श्री हीरालाल और 'सौ ग़ज़लें' – श्री ज़मीर अहसन । द्वितीय सत्र में भी पाँच पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, 'नेह के नाते' – डॉ. कमला प्रसाद, 'जस्ट फ़िट' – श्रीराम वर्मा, 'मनवा बेपरवाह' – श्री लीलाधर मंडलोई, 'नील नदी की सावित्री ' – ललित सुरजन, 'मुक्तिबोध का रचना-संसार' – वर्षा अग्रवाल। इस अवसर पर श्री लीलाधर मंडलोई, श्री ललित सुरजन, श्री

मत्स्येन्द्र नाथ शुक्ल, श्याम विद्यार्थी, विनय तिवारी, डी. एन. मोघे, राजेन्द्र शर्मा, डॉ. शान्ति चौधरी, सतीष चन्द्र अग्रवाल, डॉ. अशोक त्रिपाठी, श्री राधेश्याम अग्रवाल एवं श्री विभोर अग्रवाल ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई।

पारामारिबो में 'अभिलाषा' का लोकार्पण

जीवन के अनुभव कब कविता बन जाते हैं इसका सटीक निर्धारण कठिन है । जरई रोपने की कड़ी धूप सहने के बाद जब धान फलती है तो किसान को कितना सुख देती है उसी का विवरण कविता बन जाती है । ऐसी ही कविताओं के एक संकलन 'अभिलाषा' का लोकार्पण 29 जून, 2011 को पारामारिबो की सांस्कृतिक संस्था माता गौरी के सभागार में प्रकाशन संस्था सूरीनाम साहित्य मित्र द्वारा किया गया । बहुमुखी प्रतिभा वाले कवि, भजनिक, अभिनेता, हिंदी अध्यापक श्री देवानंद शिवराज की कविताएँ सरल भाषा में व्यक्त भावोद्गार हैं । श्री देवानंद आज भी अपने पूर्वज़ों की संस्कृति तथा परंपरा के समर्पित प्रचारक हैं और हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं ।

'अभिलाषा' का विमोचन साहित्य मित्र संस्था के अध्यक्ष पं. हरिदेव सहतू, डॉ. विमलेश कांति वर्मा, प्रतिष्ठित सरनामी कार्यकर्ता श्री मोती मारहे, भारतीय राजदूतावास के चांसरी प्रमुख श्री अरुण कुमार शर्मा और हिंदी व संस्कृति अधिकारी तथा 'अभिलाषा' की संपादक श्रीमती भावना सक्सेना के हाथों हुआ । इस अवसर पर एक कवि गोष्ठी का आयोजन भी किया गया साथ ही साथ कुछ प्रतिष्ठित कवियों की रचनाओं का पाठ छोटे बच्चों द्वारा करवाया गया । श्री देवानंद ने इस अवसर पर स्वरचित लयबद्ध गीत 'कल्कतिया में लागे मेला अरकटियन करे गुहार' प्रस्तुत करके समां बाँध दिया ।

इस संकलन की कविताओं की एक विशेषता जहाँ विषयों की व्यापकता है वहीं अर्थ विस्तार भी है।

पारामारिबो से भावना सक्सेना की रिपोर्ट

शिमला में 'गल्प के रंग' का लोकार्पण

6 अगस्त, 2011 को प्रसिद्ध कवि-आलोचक श्रीनिवास श्रीकांत की आलोचना पुस्तक 'गल्प के रंग' का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया था । समारोह का आयोजन हिमालय साहित्य, संस्कृति और पर्यावरण मंच द्वारा किया गया था । श्री आत्म रंजन ने मंच का सफ़ल संचालन किया । इस अवसर पर प्रख्यात आलोचक डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि जिस भाषा के पास अच्छे आलोचक नहीं होते उस भाषा का विकास संभव नहीं हो पाता । हिंदी के पास आलोचना की लम्बी परंपरा रही है । डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ने श्रीनिवास श्रीकांत की आलोचना पुस्तक पर विस्तार से बात करते हुए कहा कि श्रीनिवास जी मूलत: कवि हैं लेकिन इस पुस्तक के माध्यम से उनका श्रेष्ठ मर्मज्ञ आलोचक सामने आया है । श्रीनिवास जी ने अपनी पुस्तक में 15 आलोचना निबंध लिखे हैं जिनमें हिंदी के ग्यारह लेखक, मराठी के दो और जर्मन के गुण्टर ग्रास से संबंधित निबंध हैं । इस अवसर पर श्रीनिवास श्रीकांत जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया तथा उनकी कविताओं का पठन भी हुआ । इस समारोह में शिमला व प्रदेश के विभिन्न भागों से लगभग 130 लेखक उपस्थित थे ।

शिमला से आत्म रंजन की रिपोर्ट

> ''यदि सचमुच आप विश्वगगन में हिंदी की उड़ान देखना चाहते हैं, तो सहयोग रूपी पंख हर एक को लगाने होंगे ।''
>
> *सर रवींद्र घरभरन*

पटना में त्रैमासिक पत्रिका 'रंगवार्ता' का लोकार्पण

त्रैमासिक पत्रिका 'रंगवार्ता' का लोकार्पण 16 जुलाई को पटना में नाटककार रविंद्र भारती, रंगकर्मी जावेद अख्तर व हसन इमाम ने संयुक्त रूप से किया । देशी और विदेशी घटनाओं को समेटे हुए यह पत्रिका पटना से प्रकाशित हो रही है । रंगमंच की गतिविधि के लिए पटना एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में है और ऐसे में 'रंगमंच' पर आई इस पत्रिका का सभी ने स्वागत किया है ।

लोकार्पण समारोह के दौरान जनभाषा, रंगभाषा और विषय पर रंगकर्मी और पत्रकारों ने जमकर चर्चा की । रंगवार्ता के संपादक अश्वनी कुमार पंकज ने रंगवार्ता की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य में नाटक और रंगमंच आदिवासी की तरह हैं । आज के दौर में नाटक जनभाषा और सामाजिक सरोकार से दूर होते जा रहे हैं । उन्होंने कहा कि आज नाटकों को जनभाषा में तब्दील करने की ज़रूरत है ।

चर्चा में भाग लेते हुए नाटककार रवींद्र भारती ने कहा कि निर्देशक और लेखक के बीच तालमेल का साफ़ अभाव दिख रहा है और इसका प्रभाव प्रस्तुति पर पड़ रहा है । फ़िल्मकार गिरीश रंजन ने कहा कि फ़िल्मों में अभिनेता की जगह कैमरा महत्वपूर्ण होता है और नाटकों में अभिनेता की भूमिका अहम मानी जाती है । रंगकर्मी जावेद अख्तर ने कहा कि नाटक फ़िल्मों में प्रवेश का माध्यम बनता जा रहा है । इस चुनौती से निपटने की ज़रूरत है । रंगकर्मी हसन इमाम ने कहा कि रंगमंच को और मज़बूत बनाने की ज़रूरत है । इस अवसर पर कई जानेमाने रंगकर्मी व पत्रकार उपस्थित थे ।

पटना से संजय कुमार की रिपोर्ट